आशावाद

[हिन्दी – Hindi – هندي]

हमूद बिन अब्दुल्लाह इब्राहीम

अनुवाद : अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

2012 - 1433

IslamHouse.com

التفاؤل

« باللغة الهندية »

حمود بن عبد الله إبراهيم

ترجمة : عطاء الرحمن ضياء الله

2012 - 1433

IslamHouse.com

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) केवल अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफ्स की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह तआला हिदायत प्रदान करदे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करने वाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। हम्द व सना के बाद :

आशावाद

बुख़ारी और मुस्लिम ने अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि उन्हों ने कहा : नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''अपशकुन प्रभावकारी नहीं है, और सबसे अच्छी चीज़ फाल (अच्छा शकुन) है।'' लोगों ने आपसे पूछा कि ऐ अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम ! फाल क्या है ? तो आप ने फरमाया : ''अच्छी बात जिसे तुम में से कोई आदमी सुनता है'', और एक हदीस के शब्द यह हैं कि : ''अपशकुन प्रभावकारी नहीं है, और मुझे फाल : अच्छा शब्द, अच्छी वाणी पसंद है'', और एक रिवायत में है कि : ''और मैं अच्छा फाल (शकुन) पसंद करता हूँ।''

इस्लामी भाईयो ! आशावाद और अच्छा शकुन उन अर्थों में से है जिन्हें लोगों के दिल पसंद करते हैं, इसीलिए जब अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा गया जैसाकि हदीस में है, कि : फाल क्या चीज़ है ? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''अच्छा शब्द'', और यह वही चीज़ है जिसके द्वारा वह उस भलाई को व्यक्त करता है जिसकी वह आशा रखता है, तो उससे मन प्रसन्न हो जाता है, और अल्लाह तआला ने जो भलाई मुक़द्दर की है उसकी उसे शुभसूचना प्राप्त होती है। तो फाल किसी ऐसी बात को अच्छा समझना है जो सफलता, या प्रसन्नता, या सुविधा पर आधारित होती है, तो उसकी वजह से मन प्रसन्न हो जाता है और मनुष्य का संकल्प मज़बूत हो जाता है।

अल्लाह तआला ने अच्छी बात की प्रियता, चाहत और उससे लगाव को मनुष्य की प्रकृति में डाल दिया है, जिस तरह कि उनके अंदर सुंदर दृश्य और स्वच्छ पानी से प्रसन्नता और खुशी को उप्तन्न कर दिया है यद्यपि वह उसका मालिक नहीं होती है और वह उसे नहीं पीता है,

जैसा कि बनी इस्राइल की गाय के बारे में यह वर्णन किया है कि वह देखनेवालों को भली मालूम पड़ती है, तो वह उसकी ओर देखने वाले को प्रसन्न कर देती है भले ही वह उसका मालिक नहीं होता है।

अच्छे शकुन के उदाहरणों में से यह है कि आदमी के पास कोई रोगी हो, तो वह जो कुछ सुनता है उससे अच्छा शकुन (अच्छा पक्ष) ले, चुनांचे वह किसी को ऐ सालिम (अर्थात् सुरक्षित व स्वस्थ्य) ! कहते हुए सुने, तो उसके दिल में अल्लाह की अनुमति से अरोग्य (स्वस्थ्य) होने की आशा पैदा हो जाए।

आशावाद और आशापूर्ण दृष्टि, पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े में से था, चुनांचे तिर्मिज़ी के यहाँ अनस रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस है जिसे उन्हों ने सहीह कहा है कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किसी आवश्यकता के लिए निकलते थे तो आपको ऐ नजीह (अर्थात हे दृढ़ प्रतिज्ञ और सफल व्यक्ति), ऐ राशिद (अर्थात हे मार्गदर्शन प्राप्त आदमी) सुनना अच्छा लगता था। तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब किसी को पदाधिकारी बनाकर भेजते थे तो उसका नाम पूछते, यदि आप को उसका नाम अच्छा लगता तो उससे प्रसन्न होते थे, और यदि उसके नाम को नापसंद करते तो यह नापसंदीदगी (घृणा) आपके चेहरे पर दिखाई पड़ती थी। तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नामों को सुनते समय भलाई का शकुन लेते थे जैसा कि हुदैबिया के दिन घटित हुआ जब सुहैल बिन अम्र प्रकट हुए, तो उस

समय अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''तुम्हारा मामला सहल (यानी आसान) कर दिया गया'', तो वास्तव में वैसा ही हुआ जैसाकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया था। बल्कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अच्छे नामों से अच्छा शकुन लेते हुए कुछ पुरूषों या महिलाओं के नामों को उनके बुरे होने के कारण बदल दिया और उनके नये नाम रख दिए, आप ने एक सहाबी महिला का नाम आसिया (अवज्ञाकारी) से बदल कर जमीला (सुंदर) रख दिया, और एक सहाबी का नाम हुज़्न (अर्थात् शोक, दुःख) से बदल कर सहल (सहज, सरल) रख दिया।

फाल (आशावाद) संपूर्णतया भलाई है ; क्योंकि यदि मनुष्य अपने पालनहार के प्रति अच्छा गुमान रखेगा और उससे भलाई की आशा रखेगा, और अल्लाह पर उसकी आशा बहुत बड़ी होगी तो वह भलाई पर है भले ही उसे उसकी मुराद (उददेश्य) न मिली हो, फिर भी उसे आशा, आस, अल्लाह सर्वशक्ति मान से लगाव और उसपर भरोसा प्राप्त हो जाता है, और इन सब के अंदर उसके लिए भलाई है, चुनाँचे आशावाद होना बंदे का अपने पालनहार के प्रति अच्छा गुमान रखना है, और मुसलमान आदमी को हर हालत में अल्लाह के प्रति अच्छा गुमान रखने का आदेश दिया गया है ; इसीलिए कुछ विद्वानों ने उल्लेख किया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इस्तिस्क़ा (बारिश मांगने) की नमाज़ में चादर को पलटना, जिसे हम भी आपके अनुसरण में करते हैं, आशावाद की दृष्टि और अल्लाह के प्रति अच्छा गुमान रखने के

अध्याय से था कि हमारी हालत अकाल की दशा से हरियाली और उर्वरता की हालत में स्थानांतरित हो जाए, और भले ही बारिश न हो परंतु अल्लाह सर्वशक्तिमान पर आशा रखने से भलाई प्राप्त हो गई, और यह बारिश के होने से बहुत महान है; क्योंकि इसका संबंध अक़ीदा (आस्था) के मामलों से है।

जहाँ तक अच्छे फाल के हुक्म का संबंध है तो वह मुसतहब (ऐच्छिक) है, और अच्छी बात कहना उन चीज़ों में से है जिनकी इस्लामी शरीअत ने रूचि दिलाई है, और इस अच्छी बात का परिणाम यह होता है कि इसका सुनने वाला इससे अच्छा शकुन (अच्छा पक्ष) लेता है, और विशेष रूप से वह व्यक्ति जो आपत्ति ग्रस्त होता है, किंतु उसी शब्द (बात) पर भरोसा नहीं करता है, बल्कि वह अल्लाह पर अच्छा गुमान रखने के अध्याय से है ; इसीलिए हदीसे कुदसी में आया है : ''मैं अपने बंदे के अपने प्रति गुमान के पास हूँ।'' यह एक सहीह हदीस है जिसे अहमद वगैरह ने रिवायत किया है।

भाईयो ! जब बंदा अल्लाह तआला से अपनी आशा और उम्मीद को काट ले, तो यह उसके लिए बुरा है, और यह उस अपशकुन में से है जिसमें बदगुमानी और मुसीबत व आपदा की आशा पायी जाती है।

अपशकुन या विषादात्मक विचार का मूल अर्थ घृणित व नापसंदीदा कथन या कर्म वगैरह है, और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को

फाल इसलिए पसंद था क्योंकि अपशकुन लेना बिना किसी निश्चित कारण के अल्लाह सर्वशक्तिमान के साथ बुरा गुमान रखना है।

अपशकुन लेना जाहिलियत (अज्ञानता) के काल में अरबवासियों के यहाँ विद्यमान था, वे लोग अपशकुन लेते थे, चुनाँचे वे हिरणियों और पक्षियों को भड़काते थे, यदि वे दायीं ओर जाते तो वे लोग उसे शुभ समझते थे, और अपनी यात्रा और आवश्यकताओं की पूर्ति को जारी रखते थे, और यदि वे बायीं ओर जाते थे तो वे अपनी यात्रा और आवश्यकता से रूक जाते थे, तथा उससे अपशकुन लेते थे और उसे अशुभ समझते थे। इस तरह अधिकांश समय यह उन्हें उनके हितों से रोक देता था, तो इस्लामी शरीअत ने इसका खण्डन किया और इसे असत्य और व्यर्थ घोषित किया और इसे निषिद्ध ठहराया, और इस बात की सूचना दी कि इसका लाभ या हानि में कोई प्रभाव नहीं है, तो यही आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फरमान : ''अपशकुन (प्रभावकारी) नहीं है'' का अर्थ है, और एक अन्य हदीस में है कि : ''अपशकुन शिर्क (अनेकेश्वरवाद) है।'' अर्थात् यह अक़ीदा रखना कि यह लाभ पहुँचाता है या हानि पहुँचाता है ; क्योंकि उन्हों ने उसके प्रभावकारी होने का अक़ीदा रखते हुए उसकी अपेक्षा के अनुसार कार्य किया है, अतः वह शिर्क है इसलिए कि उन्हों ने कार्य और अस्तित्व में उसे प्रभावकारी बना दिया।

तबरी ने इकरिमा से रिवायत किया है कि उन्हों ने कहा : मैं इब्ने अब्बास के पास था, तो एक परिंदा गुज़रा जिसने आवाज़ लगाई, तो

आदमी ने कहा : अच्छा है भला है, तो इब्ने अब्बास ने कहा : इसके पास न अच्छाई है न बुराई।

इसी तरह अरब के यहाँ तीरों के द्वारा क़िस्मत मालूम करने की प्रथा थी, अरब के लोग जाहिलियत के काल में तीर रखते थे जिनमें से एक पर ''करो'' और दूसरे पर ''न करो'' लिखा होता था, जब वे किसी चीज़ के करने का इरादा करते थे तो उन तीरों के द्वारा क़िस्मत मालूम करते थे, और वह इस प्रकार कि वे उन्हें डालते थे, यदि वह तीर निकलता था जिस पर ''करो'' लिखा होता था तो उस काम को करते थे, और यदि वह तीर निकलता जिस पर '' न करो'' लिखा होता तो उस काम से रूक जाते थे। तथा इसी अध्याय से वह भी है जो लकीर खींचकर किया जाता है, तथा वह कुर्आ (गोटी निकालकर) भी हो सकता है, और उसके बहुत से प्रकार हैं, तथा वह तारों में देखकर भी होता है। तो इस्लामी शरीअत ने आकर इन सबको निरस्त कर दिया, पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''जिसने कहानत किया (भविष्यवाणी की) या उसे अपशकुन ने यात्रा से रोक दिया तो वह हम में से नहीं है।'' और इसी तरह की अन्य हदीसें भी हैं।

तथा गैर अरबों के यहाँ भी अपशकुन का अस्तित्व था, जब उनमें से कोई व्यक्ति बच्चे को शिक्षक के पास जाते हुए देखता तो उससे अपशकुन लेता था, और यदि उसे वापस लौटते देखता तो अच्छा शकुन लेता था, इसी तरह अगर ऊँट को सामान उठाते हुए देखता तो

अपशकुन लेता, और यदि उसे अपने बोझ को उतारते हुए देखता तो अपने काम को जारी रखता था, और इसके समान अन्य चीज़ें भी थीं। इसी तरह हम आधुनिक समय में पश्चिम के लोगों को देखते हैं कि वे तेरह की संख्या से अपशकुन लेते हैं, चुनाँचे कुछ इमारतों में तेरहवीं मंज़िल नहीं पाई जाती है, बारहवी मंज़िल होती है फिर उसके बाद ही सीधे चौदहवीं मंज़िल होती है, इसी तरह उनके यहाँ कुछ अस्पतालों में कमरा संख्या तेरह नहीं होता है ; इस कारण कि वे इस संख्या से अपशकुन लेते हैं, यह परम मूर्खता और निरी जहालत है, अन्यथा तेरह की संख्या का शकुन या अपशकुन से क्या लेना देना है ?!

इसी तरह कुछ लोग ऐसे हैं जो एम्बूलेंस की गाड़ी की आवाज़ या दमकल या पुलिस इत्यादि की गाड़ी की आवाज़ से अपशकुन लेते हैं, तथा कुछ लोग ऐसे भी हैं जो कुछ रंगों जैसे कि लाल रंग से अपशकुन लेते हैं, इसी तरह कुछ उपग्रह चैनलों, पत्रिकाओं और कुछ रेडियो प्रसारणों में राशि नाम की चीज़ पाई जाती है, जैसे मिथुन राशि, वृश्चिक राशि, वृष राशि वगैरह, तथा उसमें शुभ और अशुभ दिन होते है, और इस राशि के अशुभ दिन ही उस राशि के शुभ दिन होते हैं, और जो व्यक्ति राशि के इस दिन में पैदा हुआ है वह शुभ और भाग्यशाली है, और जो उस राशि में जन्म लिया है वह अशुभ और अभागा है, जबकि अल्लाह की क़सम जिसने इसे गढ़कर पेश किया है वही अशुभ है, नहीं तो अमुक राशि या अमुक दिन का मनुष्य के अंजाम और उसके मामले के परिणाम में क्या हस्तक्षेप है ?! बल्कि यह सब अल्लाह सर्वशक्तिमान

की ओर से होता है, और राशियों और उसके अलावा अन्य चीज़ों का किसी चीज़ में कोई हस्तक्षेप नहीं होता है, बल्कि वह उस शिर्क में से है जिससे शरीअत ने मना किया है।

तथा कुछ लोग ऐसे भी पाये जाते हैं जो अपने नये बच्चे का नाम उस बच्चे के नाम पर नहीं रखते हैं जिसकी मृत्यु हो चुकी है इस डर से कि कहीं वह भी अपने भाई की तरह मर न जाए, जबकि यह उस अपशकुन में से है जिससे रोका और मना किया गया है।

अतः हम सब के ऊपर अनिवार्य है कि हम अल्लाह के क़ज़ा व क़द्र (यानी फैसले और तक़दीर) पर विश्वास रखें, अपने पालनहार के प्रति अच्छा गुमान रखें और अपशकुन न लें, क्योंकि तक़दीर (भाग्य) कभी कभी बुरे शब्द या अल्लाह के प्रति बदगुमानी के अनुकूल हो जाती है, तो मुसीबतें और आपदायें घटित हो जाती हैं, इसीलिए कहा गया है कि : आपदा बोलने से संबंधित है, और मनुष्य उस बुराई से ग्रस्त हो जाता है जिसे उसने गुमान किया था।''

फिर यह बात भी है कि अपशकुन या विषादात्मक विचार वाला किसी चीज़ के घटित होने से पूर्व ही उस अपशकुन से प्रताणित और पीड़ित होता है, क्योंकि कुछ लोग अपने पालनहार के साथ बुरा गुमान रखने और निराशावाद व अपशकुन रखने के कारण आपदाओं और मुसीबतों के घटित होने से पहले ही शोक, भय और पीड़ा को एकत्र कर लेता है।

ऐ मुसलमानो, इस्लाम ने हमें आशावाद और जीवन के प्रति अच्छा विचार रखने की रूचि दिलाई है ; क्योंकि यह कार्य करने के लिए साहस को बढ़ावा देता है, और इसी के द्वारा आशा प्राप्त होती है जो कि सफलता का सबसे बड़ा कारण है, और यह इस शरीअत के रहस्यों में से है कि वह मुसलमान के लिए सफलता के कारणों को जुटाता है, इसीलिए हम उस छात्र को देखते हैं जो परीक्षा के लिए या थीसिस पर चर्चा के लिए जाता है और वह अपने पालनहार के प्रति अच्छा गुमान रखता तो आप उसके उत्साह को मज़बूत पायेंगे, और यह चीज़ उसके मूल्यांकन और सफलता पर परिलक्षित होती है, इसके विपरीत जो व्यक्ति निराशावादी होकर प्रवेश करता है तो निःसंदेह वह विफल हो जायेगा भले ही वह उत्तर को अच्छी तरह जानता हो।

इसी तरह आप दो यात्रियों को देखेंगे कि उनमें से एक अपने बच्चों के प्रति निश्चिंत होता है कि अल्लाह तआला उनकी रक्षा करेगा, और यह कि वे कुशल मंगल हैं और अल्लाह के हुक्म से उन्हें कोई आपदा नहीं पहुँची है, तो वह अपने पालनहार पर भरोसा करनेवाला होता है कि अल्लाह उन्हें कदापि नष्ट नहीं करेगा, जबकि आप दूसरे व्यक्ति को पायेंगे कि वह अपने मन में कहता है कि : ''मेरे बच्चों को ज़रूर कोई मुसीबत पहुँची है, और उन्हों ने मुझे फोन क्यों नहीं किया ? शायद उनमें से कोई अस्पताल में प्रवेश किया है, शायद उनके साथ कोई आपदा घटित हुई है'', और यह निराशावाद और अल्लाह के प्रति बदगुमानी है जिससे उसने हमें दूर रहने का आदेश दिया है।

मुसलमानो ! निराशावाद का संबंध नैतिकता से है, वह एक दुष्ट मनौवैज्ञानिक प्रकृति है, क्योंकि वह आशा को कमज़ोर कर देती है और विफलता का कारण बनती है, चुनाँचे आप निराशावादी को सदा बिगड़े हुए चेहरावाला पायेंगे, उसके चेहरे पर ताज़गी नहीं पायेंगे, रही बात आशावाद कि तो वह चेहरे के चमक के कारणों में से है, और किसी को मुसकुराता हुआ नहीं पायेंगे मगर वह आशावादी होगा, लोगों ने आशावादी से निराशावादी के पहचान के लिए आधे गिलास पानी का उदाहरण वर्णन किया है, यदि उसे आशावादी पर पेश किश जाए तो वह कहेगा : ''यह पानी का आधा भरा हुआ गिलास है'', और निराशावादी कहेगा कि : ''यह पानी का आधा खाली गिलास है।''

अतः जो इस बुरे स्वभाव से पीड़ित है वह अपने मन को इससे शुद्ध और पवित्र करे, क्योंकि दुष्ट आदतों और स्वभावों से छुटकारा पाना संभव है जैसाकि हमारे पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है : ''सहनशीलता, सहनशीलता अपनाने से प्राप्त होती है और ज्ञान सीखने से आता है।''

मुसलमानो ! आशावाद का हमारे संपूर्ण जीवन में हमारे सभी फैसलों से संबंध है, चाहे वह इबादत में हो और वह इस प्रकार कि बंदा यह आशा रखे कि अल्लाह उसकी उपासना और उसके प्रयास को कदापि व्यर्थ नहीं करेगा यदि उसने अल्लाह के लिए इख़्लास (ईमानदारी) से काम लिया है, या वह ज्ञान की प्राप्ति में हो इस प्रकार कि अल्लाह उसे

लाभकारी ज्ञान प्रदान करेगा और उसके द्वारा लाभ पहुँचायेगा, इसी तरह आशावाद का संबंध कार्य या पद या किसी अन्य गतिविधि से भी है, इसीलिए हमारे समाज में यदि आप सभी सफल लोगों को देखें चाहे वे धर्म के अंदर, या दावत (आमंत्रण), या तिजारत (वाणिज्य) या किसी भी क्षेत्र में हो, आप उन सब के यहाँ एक सामान्य भाजक पायेंगे, और वह आशावाद है, और आशावाद के लिए इतना काफी है कि उससे वह आशा (उम्मीद) प्राप्त होती है जो सौभाग्य व खुशी के अध्याय से है, और जैसा कि कहा गया है : ''भलाई की आशा रखो वह तुम्हें मिलेगी।''

अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हमें उन लोगों में से बनाए जो अल्लाह के प्रति अच्छा गुमान रखते हैं।